भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 104

उत्तर देने की तारीख 01.12.2025

महाराष्ट्र में जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना और विस्तार

104. श्री विशालदादा प्रकाशबापू पाटील :
सुश्री प्रणिती सुशीलकुमार शिंदे :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) महाराष्ट्र में वर्तमान में संचालित और निर्माणाधीन जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों (टीसीसी) की संख्या का नंदुरबार, सोलापुर और सांगली सहित जिला-वार ब्यौरा क्या है और निर्माणाधीन केंद्रों के पूरा होने की समय-सीमा क्या है;

(ख) वर्तमान और विगत वित्त वर्षों में महाराष्ट्र में टीसीसी के लिए आवंटित और उपयोग किए गए कुल बजट का बुनियादी ढांचे, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामुदायिक सहभागिता के लिए निधि सहित ब्यौरा क्या है।

(ग) टीसीसी परियोजनाओं के कार्यान्वयन और पर्यवेक्षण में शामिल सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों, स्वायत्त निकायों और गैर-सरकारी संगठनों की सूची का ब्यौरा क्या है और इसके लिए आवंटित बजट कितना है;

(घ) उक्त केंद्रों के माध्यम से जनजातीय भाषाओं, कलाकृतियों और प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण के लिए किए गए उपायों और दस्तावेज़ीकरण एवं डिजिटल अभिलेखीकरण के लिए प्रदान की गई सहायता का ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या सरकार की महाराष्ट्र में जनजातीय सांस्कृतिक केंद्रों के नेटवर्क का विस्तार करने की योजना है और यदि हाँ, तो प्रस्तावित नए स्थानों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): भारत सरकार ने जनजातीय संस्कृति सहित लोक कला और संस्कृति के विभिन्न रूपों के संरक्षण, संवर्धन और परिरक्षण हेतु सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी)

स्थापित किए हैं जिनके मुख्यालय पटियाला (पंजाब), नागपुर (महाराष्ट्र), उदयपुर (राजस्थान), प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), दीमापुर (नागालैंड) और तंजावुर (तमिलनाडु) में स्थित हैं। ये क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र देश भर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों का नियमित आधार पर आयोजन करते हैं जिसके लिए वे पूरे भारत से लोक/जनजातीय कलाकारों को शामिल करते हैं जो इन कार्यक्रमों के दौरान अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र कलाकारों और शिल्प प्रदर्शनों की मेजबानी के लिए सभागार, प्रदर्शनी दीर्घाओं, पुस्तकालयों और शिल्पग्राम/कलाग्राम जैसी समर्पित अवसंरचनात्मक सुविधाओं सहित पूर्ण रूप से कार्य कर रहे हैं।

सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा जनजातीय भाषाओं, कहानियों, शिल्पों और मंच कलाओं को जीवित रखने के लिए निम्नलिखित कार्यकलापों को सक्रिय रूप से संचालित किया जा रहा है:-

- स्थानीय लोगों और भाषा विशेषज्ञों की सहायता से संकटापन्न जनजातीय भाषाओं और बोलियों का अभिलेखन और प्रलेखन,
- जनजातीय लोककथाओं और मौखिक इतिहास के संबंध में पुस्तकों, रिपोर्टों और कहानियों का मुद्रण,
- जनजातीय शिल्पों, लोक रंगमंच, संगीत और नृत्य पर प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन कार्यशालाओं का आयोजन,
- वार्षिक जनजातीय महोत्सवों, शिल्प मेलों और कला शिविरों का आयोजन,
- अनूठी जनजातीय संस्कृति को साझा करने के लिए कलाकारों को भारत के अन्य भागों में प्रस्तुति देने के लिए शामिल किया जाता है,
- जनजातीय शोधकर्ताओं, लेखकों और युवा कलाकारों को अध्येतावृत्ति, अनुदान और प्रदर्शन के अवसर प्रदान करके उनकी सहायता करना।

(ड.): ऐसा कोई प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन नहीं है। उल्लेखनीय है कि नागपुर, महाराष्ट्र में स्थित दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एससीजेडसीसी) पहले से ही इस राज्य की जनजातीय कला और संस्कृति के परिरक्षण और संवर्धन का कार्य करता है।

*****